अध्याय एकइस

डॉ. परमेश्वर दूबे शाहाबादी

[शाहाबाद के निवासी । टेल्को, जमशेदपुर में नोकरी । असामयिक निधन । कमे समय में कविता-हास्य-व्यंग्य, मुक्त छंद आ नवगीत अउर निबंध-फीचर, रिपोर्ताज, ललित निबंध के लेखक । 'क्षत्रज्ञ' कविता संग्रह चर्चित । भोजपुरी के लोककथा के संग्रह, अध्ययन आ शोध । मरणोपरांत पी-एच.डी ।]

रूप के हिरन

किलकारी नदियन के
गोद में पहाड़ी के
थथमल बा रूप के हिरन ।
गते-गते उतरेला साँझ के ई गोरी
जनमतुआ पलना मे चिरई के लोरी ।
गलबाँही दे दे के

जंगल अलापेला
थिरकेला मंथर पवन ।...
नदिया तूफानी ना मानेले घेरा,
अल्हड़ जवानी प रूप के दरेरा ।
मृगछौना मड़ई के
पंजरे में फुदुकता
हो न जाय सीता हरन ।...
महँगी के बहँगी प देह के सुखौता,
बेकल जवानी प जीभ के सरौता ।
हाथ के तिजोरी में
दौलत पसीना के
पेट में बा लंका दहन ।
बीन प सँपेरा के डोले ले नागिन
बाँस के पेटारी में किस्मत अभागिन,
संझा सिहर जाये
नाग के जहर पी के-
विकृत मन करेला वमन ।
थथमल बा रूप के हिरन !

❑

अभ्यास

बहुविकल्पी/वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. परमेश्वर दूबे शाहाबादी कहाँ के निवासी रहीं ?
2. शाहाबादी जी कहाँ काम करत रहीं ?
3. 'रूप के हिरन' कवना विधा के कविता ह ?
   (क) गीत (ख) नवगीत
   (ग) प्रबंध काव्य (घ) मुक्त छंद
4. कवि का कवन चीज के किलकारी सुनाई पड़त बा ?
   (क) पहाड़ी के (ख) नदी के
   (ग) हिरन के (घ) रूप के

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. कवि के परिचय दीं ।
2. कवनो एगो छन्द के भावार्थ लिखीं ।
3. मेहनत के बाद पेट ना भरला के स्थिति के बरनन एह नवगीत में कइसे आइल बा ? लिखीं ।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'रूप के हिरन' कविता के भावार्थ लिखीं ।

2. 'नवगीत' कविता के एगो सशक्त विधा ह ? एकरा बारे में विचारपूर्ण लेख लिखीं ।
3. 'रूप के हिरन' में जीवन के 'जटिलता के जवन बरनन आइल बा, ओकरा बारे में बतलाईं ।

परियोजना कार्य

1. कवनो दोसरा कवि के दूगो 'नवगीत' के रचना प्रस्तुत करीं आ ओह में आइल जीवन के कठिनाई पर विचार व्यक्त करीं ।

●